पाठ्यक्रम का मासिक विभाजन
सत्र 2025–26
कक्षा – 11
विषय संगीत (वादन)
(तबला एवं पखावज/सितार एवं अन्य तंत्र वाद्य)

क्र0 स0	माह	पाठ्यक्रम
1	अप्रैल	**पूर्व राग, उत्तर राग, आश्रय राग** वाद्यों का वर्गीकरण। चुने गये वाद्य के विभिन्न अंगों का वर्णन एवं मिलाने का विशेष ज्ञान, भारतीय संगीत का इतिहास।
2	मई	**संगीत विज्ञान**– स्वर,तोड़ा, तिहाई, चिकारी, पेशकारा, टुकड़ा, मुखड़ा,पलटा, अल्पत्व, बहुत्व चयनित वाद्य का इतिहास। जीवनी/ योगदान– अमीर खुसरों , पं0 हरि प्रसाद चौरसिया।
3	जून	**ग्रीष्मावकाश**
4	जुलाई	1. संगीत सम्बन्धी विषयों पर सामान्य निबन्ध। 2. बाजों के प्रकार (दिल्ली) (बनारस)। 3. कठिन अलंकारों की रचना। 4. विलम्बित, द्रुतगतें। मध्य, द्रुतलय का ज्ञान। गत और गत के प्रकारों का अध्ययन।
5	अगस्त	जीवनी तथा सांगीतिक योगदान– भारतीय संगीतज्ञों– पं0 शारंगदेव, तानसेन, उ0 विलायत खाँ ,अल्लारक्खा खाँ। भातखण्डे, पं0 रविशंकर। परिभाषा एवं व्याख्या– जमजमा, मोहरा, तिहाई, सम, ताली, खाली, भरी।
6	सितम्बर	वाद्य पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तावित रागों की विशेषताएं– राग– राग भीमपलासी का पूर्ण परिचय एवं भीमपलासी राग की विशेषताएं। राग भीमपलासी में एक गत मसीतख़ानी और एक गत रज़ाख़ानी जिसका विस्तार सहित अभ्यास। राग तिलक कामोद का पूर्ण परिचय, विशेषताएं तथा उसकी रज़ाख़ानी गत बिना किसी विस्तार के।, अल्प स्वर विस्तार। **ताल–** तीव्रा ताल, झपताल में विस्तृत प्रायोगिक एवं लिखित रूप से पर्याप्त बोल (ठेका, पेशकार, परन, टुकड़े, तिहाइयाँ आदि) जानना चाहिए। पाठ्यक्रम की तालों– तीनताल, झपताल के विभिन्न लयात्मक प्रकार, तालों को तालिपि में लिखने की क्षमता जैसे– कायदा, परन, टुकड़ा। सूलताल
7	अक्टूबर	स्वर विस्तार के माध्यम से रागों का विकास एवं भेद (तुलना)। गतों को स्वरलिपि में साधारण तोड़े एवं झाले के साथ लिखने की योग्यता। **राग–** राग भैरव का विस्तृत लिखित एवं प्रयोगात्मक अध्ययन। एकताल, चारताल के विभिन्न लयों के साथ लयात्मक प्रकार। तालों में कायदा, पलटा, तिहाई के साथ लिपिबद्ध करने की योग्यता। सोलो प्रदर्शन की तालें– तीनताल बाजों के प्रकार–अजराड़ा के बारे में विस्तार में। **अर्द्धवार्षिक लिखित परीक्षा का आयोजन।**
8	नवम्बर	राग– राग पूर्वी ताल– ताल दादरा, कहरवा, रूपक तालों का पूर्ण परिचय तथा क्रियात्मक अभ्यास। सोलो प्रदर्शन की तालें– एकताल
9	दिसम्बर	स्वर समूहों के आधार पर रागों को पहचानना।

		प्रयोगात्मक रूप से अभिव्यक्ति आलापों द्वारा रागों को पहचानने की योग्यता। राग– राग मारवा का पूर्ण परिचय, विशेषताएं। मारवा राग में बिना किसी कलात्मक विकास के एक गत (रज़ाख़ानी) का लिखित एवं प्रायोगिक अध्ययन/अभ्यास। ठेकों के कुछ बोलों के आधार पर तालों को पहचानने की योग्यता। सोलो प्रदर्शन की तालें– चारताल, सूलताल। विभिन्न लयकारियाँ– जैसे– दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं आड़ का अभ्यास। सरल धुनों के साथ दादरा, कहरवा, तीनताल, रूपक, एकताल, चौताल, धमार में संगत करने की योग्यता।
10	जनवरी	**पुनरावृत्ति।**
11	फरवरी	**वार्षिक गृह लिखित परीक्षा का आयोजन एवं उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन।**
12	मार्च	**परीक्षाफल का वितरण।**